# D.El.Ed

# Question Paper



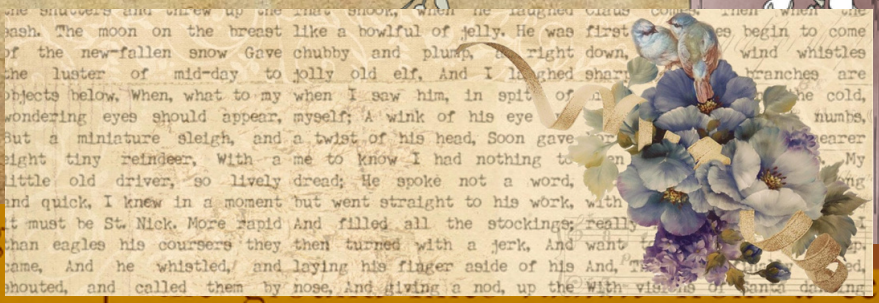












Code No. : **446-H**

ಕರ್ನಾಟಕ ಶಾಲಾ ಪರೀಕ್ಷೆ ಮತ್ತು ಮೌಲ್ಯನಿರ್ಣಯ ಮಂಡಲಿ, ಮಲ್ಲೇಶ್ವರಂ, ಬೆಂಗಳೂರು–560003

KARNATAKA SCHOOL EXAMINATION AND ASSESSMENT BOARD

Malleshwaram, Bengaluru-560003

ದ್ವಿತೀಯ ವರ್ಷದ ಡಿ.ಎಲ್.ಇಡಿ. ಪೂರಕ ಪರೀಕ್ಷೆ, ಡಿಸೆಂಬರ್, 2022

**Second Year D.El.Ed. Supplementary Examination, December, 2022**

| | | |
|---|---|---|
| Subject / ವಿಷಯ | : | **Facilitating Learning (HPS)**<br>**First Language - HINDI**<br>ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ಅನುಕೂಲಿಸುವುದು (ಹಿ.ಪ್ರಾ.ಶಾ.)<br>ಪ್ರಥಮ ಭಾಷೆ – ಹಿಂದಿ |
| Date of Exam. / ಪರೀಕ್ಷೆಯ ದಿನಾಂಕ | : | 12.12. 2022 |
| Maximum Marks / ಗರಿಷ್ಠ ಅಂಕಗಳು | : | 60 |
| Duration of Exam / ಪರೀಕ್ಷೆ ಅವಧಿ | : | 3 hours / 3 ಗಂಟೆಗಳು |
| Time / ಸಮಯ | : | 2.00 PM to 5.00 PM |

**ಅಭ್ಯರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಸಾಮಾನ್ಯ ಸೂಚನೆಗಳು / *General Instructions to the Candidates :***

1. ಅಭ್ಯರ್ಥಿಗಳು ತನ್ನ ನೋಂದಣಿ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶ ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಮುದ್ರಿಸಿರುವಂತೆಯೇ ಉತ್ತರ–ಪುಸ್ತಿಕೆಯಲ್ಲಿ ನೀಡಿರುವ ನಿಗದಿತ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಸಷ್ಟವಾಗಿ ಬರೆಯಿರಿ.
   Candidates should write their Register Number on the Answer Booklet as printed in their admission ticket.
2. ಅಭ್ಯರ್ಥಿಗಳು ಹೆಚ್ಚುವರಿ ಉತ್ತರ ಹಾಳೆಗಳನ್ನು ಪಡೆದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ಹಾಳೆಗಳ ಮುಖಪುಟದ ಮೇಲಿನ ನಿಗದಿತ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯ ಉತ್ತರ–ಪುಸ್ತಿಕೆಯ ಕ್ರಮ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಬರೆಯತಕ್ಕದ್ದು.
   Candidates should write their Main Answer Booklet Number on the additional answer sheets in the space provided.
3. ಅಭ್ಯರ್ಥಿಗಳು ನಿಗದಿಪಡಿಸಿದ ಸ್ಥಳವನ್ನು ಹೊರತುಪಡಿಸಿ ಇನ್ನಿತರೇ ಯಾವುದೇ ಪುಟಗಳಲ್ಲಿ ನೋಂದಣಿ ಸಂಖ್ಯೆ, ಗುರುತು ಹಾಗೂ ಚಿಹ್ನೆ ಇನ್ನಿತರೆ ಯಾವುದೇ ಮಾಹಿತಿಗಳನ್ನು ಬರೆಯಬಾರದು. ಒಂದು ವೇಳೆ, ಈ ಬಗೆಯ ಯಾವುದೇ ಮಾಹಿತಿಗಳನ್ನು ಉತ್ತರ–ಪುಸ್ತಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಬರೆದ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಅಂತಹ ಉತ್ತರ–ಪುಸ್ತಿಕೆಯನ್ನು ಮೌಲ್ಯಮಾಪನಕ್ಕೆ ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ.
   Candidates should not write Register Number, mark, sign or any other information in the Answer Booklet except in the specified place. In case, it is found any information in the sheets of the answer scripts such answer scripts will not be considered for evaluation.
4. ಪರೀಕ್ಷಾ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಭ್ಯರ್ಥಿಯು ಪರೀಕ್ಷಾ ಅವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡಿರುವುದು ಕಂಡುಬಂದಲ್ಲಿ ಹಾಗೂ ಪರೀಕ್ಷಾ ಸೂಚನೆಗಳನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅಂತಹ ಅಭ್ಯರ್ಥಿಯ ವಿರುದ್ಧ ಪರೀಕ್ಷಾ ನಿಯಮಾನುಸಾರ ಶಿಸ್ತು ಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಗುರಿಪಡಿಸಲಾಗುವುದು ಮತ್ತು ಅಂತಹ ಅಭ್ಯರ್ಥಿಯ ಉತ್ತರ–ಪುಸ್ತಿಕೆಯನ್ನು ಮೌಲ್ಯಮಾಪನಕ್ಕೆ ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ.
   Candidate found to be indulging in malpractice during examination and violating examination instructions, action will be taken against such candidate as per the examination rules and his/her Answer Booklet will not be considered for evaluation.
5. ಉತ್ತರ ಬರೆಯಲು ಕಪ್ಪು / ನೀಲಿ ಶಾಯಿಯ ಬಾಲ್ ಪಾಯಿಂಟ್ ಪೆನ್ ಮಾತ್ರ ಉಪಯೋಗಿಸತಕ್ಕದ್ದು.
   Use black / blue ball point pen only to write the answers.



institutes.aglasem.com
aglasem.com

*सामान्य सूचनाएं :*
1. यह प्रश्नपत्र 60 अंकों का है।
2. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए 3 घंटों का समय निश्चित है।
3. सूचना के अनुसार प्रत्येक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

## भाग – I

**I इस भाग में 10 प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखना आवश्यक है। प्रत्येक प्रश्न के 3 विकल्प दिये गये हैं। उनमें से उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :** **1 x 10 = 10**

1. पढ़ना मन को ..... देने वाली प्रक्रिया है –
   [अ] मधुरता [आ] कटुता [इ] सुंदरता
2. अच्छे पढ़ने वाले ..... रीति से पढ़ते हैं –
   [अ] अर्थपूर्ण [आ] गलत [इ] बिना अर्थ
3. कविता में ..... अधिक होती है –
   [अ] अप्रशंसा [आ] प्रशंसा [इ] नी प्रशंसा
4. अध्यापक द्वारा छात्रों को दी गयी सूचना होनी चाहिए –
   [अ] लंबी [आ] कठिन [अ] सरल
5. समाज के विविध स्तर से आने वाले बच्चों को पाठशाला ..... अवसर देती है –
   [अ] समान [आ] असमान [इ] न समान
6. बहुभाषा कक्षाओं में शिक्षक को ज्यादा ..... होना आवश्यक है –
   [अ] सक्रियाशील [आ] क्रियाशील [इ] अक्रियाशील
7. कक्षा का वातावरण ..... हो तो बच्चे उनके अनुभवों को दूसरों के साथ बांटते हैं –
   [अ] विश्वास हित [आ] विश्वास रहित [इ] विश्वास भरा
8. बच्चों को स्कूल की भाषा को स्वीकार करने में पालकों का योगदान ..... –
   [अ] अमहत्वपूर्ण [आ] न महत्वपूर्ण [इ] महत्वपूर्ण
9. बुद्धिमंद छात्रों की बुद्धिमत्ता का निरीक्षण करना ..... होता है –
   [अ] सुलभ [आ] कठिन [इ] सहज
10. कक्षा की चर्चा में सबके अभिप्रायों को ..... दिया जाए –
    [अ] अवकाश [आ] न अवकाश [इ] सुअवकाश

## भाग – II

**II इस भाग में आठ प्रश्न दिये गये हैं। उनमें से कीन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखना आवश्यक है।** **2 x 5 = 10**

11. वाचन किसे कहते है?
12. समर्थ वाचक की विशेषताएँ बताइए?
13. कक्षा में साहित्य का उपयोग क्या है?



institutes.aglasem.com
aglasem.com

14. मातृभाषा की परिभाषा स्पष्ट कीजीए?
15. पढना और लिखने में क्या संबंध है?
16. प्रत्यक्ष विधि मतलब क्या है?
17. लिखित भाषा औपचारिकक्यों होनी चाहिए?
18. स्वतंत्र छात्रों किनहे कहते है?

## भाग - III

**III निचे दिए गय हर प्रश्न के लिए (अ) अथवा (आ) विकल्पों दिया गया है। उसमें एक के लिए उत्तर लिखिए हर एक प्रश्न का उत्तर एक पृष्ट से ज्यादा न हो। 5 x 8 = 40**

19. [अ] लेखन के बारे मे एन.सी.टी.ई. के द्वारा प्रकाशित विश्वसनीय वाचन नामक निबंध मे अंतर्निहित अंगों को समझाइय.

**अथवा**

[आ] वाचन कि प्रक्रिया प्रेरणा का महत्व का विवरण दीजिए ।

20. [अ] वाचन शिक्षण से पूर्व की तैयारी कैसे करनी चाहिए?

**अथवा**

[आ] शब्द संपदा का महत्व क्या है? विवरण दिजिए।

21. [अ] अर्थ अवलंबित अधिगम कर्ता और पूर्ण अवलंबित अधिगम कर्ता विवरण दिजिए।

**अथवा**

[आ] मंदबुद्धिवाले छात्र और सामान्य छात्रों को कैसे शिक्षण देना चाहिए?

22. [अ] भाषा और चिंतन एक दुसरे के पुरक होते है। स्पष्ट करे।

**अथवा**

[आ] शिक्षण के लिए शिक्षकों की पूर्व तैयारी आवश्यक है? विवरण दिजिए।

23. [अ] साहित्य के अध्ययन की उपादेयता का विवरण दिजिए।

**अथवा**

[आ] घरेलू भाषा के स्कूली भाषा मे परिवर्तन करने की प्रक्रिया स्पष्ट किजिए।

24. [अ] संवहन विधि की मूख्य विशेषताओं पर चर्चा किजिए।

**अथवा**

[आ] पाठयोजना के मुख्य अंगो पर चर्चा किजिए।

25. [अ] श्रवण कौशल का अर्थ और महत्व का विवरण दिजिए।

**अथवा**

[आ] सक्रिय श्रवण हेतू सहायक प्रश्न पूंछने की प्रमुखता का विवरण दिजिए।

26. [अ] विदयालयी जीवन मे लेखन की भूमिका स्पष्ट किजिए?

**अथवा**

[आ] स्व-अधिगम की सामग्री के रूप में लेखन कैसे करना?



institutes.aglasem.com
aglasem.com

DO NOT WRITE ANYTHING HERE



institutes.aglasem.com

aglasem.com

# Answer Key

institutes.aglasem.com

aglasem.com

# ಮಾದರಿ ಉತ್ತರಗಳು
# MODEL ANSWERS

ಸಂಕೇತ ಸಂಖ್ಯೆ : **446-H**

**Code No. : 446-H**

## ಡಿ.ಎಲ್.ಎಡ್. ದ್ವಿತೀಯ ವರ್ಷ
## D.El.Ed. SECOND YEAR
## ಕಲಿಕೆಯನು-ಅನುಕೂಲಿಸುವುದು (ಹಿ.ಪ್ರಾ.ಶಾ.)
## ಪ್ರಥಮ ಭಾಷೆ – ಹಿಂದಿ
## FACILITATING LEARNING ( HPS )
## FIRST LANGUAGE — HINDI

ದಿನಾಂಕ : 11. 07. 2022 ] [ ಪರಮಾವಧಿ ಅಂಕಗಳು : 60

Date : 11. 07. 2022 ] [ Max. Marks : 60

**भाग - I**

**I. योग्य पर्याय चुनकर लिखिए –** **1 × 10 = 10**

1) समान

2) साध्य

3) आकार

4) पारस्परिक

5) जोड़ता

6) औपचारिकता

7) सकारात्मक

8) क्रियाशील

9) मधुरता

10) तत्क्षण ।



institutes.aglasem.com

aglasem.com

## भाग - II

**II. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए — 2 × 5 = 10**

11) नाटक करते समय कल्पना और सृजनशीलता की सृष्टि होती है । छात्रों में सहकारी मनोभाव बढ़ता है । स्वतंत्र रूप से पद प्रयोग, ध्वनि में चढ़ाव-उतार, समय के अनुसार बुद्धि निर्मित बातें आदि द्वारा भाषा प्रयोग की व्याप्ति बढ़ती है । प्रेक्षकों से मिलनेवाले अभिप्रायों से छात्रों का आत्मविश्वास बढ़कर उनकी भाषा का विकास होता है ।

12) पद्य पढ़ाते समय ताल, लय, ध्वनि और नाद पढ़नेवालों का मन लुभाते हैं जिससे मन में सुंदरता और मधुरता का भाव स्फुरता है । पद्य द्वारा छात्रों को उनके विचार, कल्पना, भावना आदि को अभिव्यक्त करने का स्वातंत्र्य देने से उनमें सृजनशीलता की वृद्धि होती है । कविता में आनेवाले रूपक, भावना और विचारों के द्वारा वे खुद कविता की रचना कर सकते हैं ।

13) लिखित भाषा की कुछ सीमा होती है । लेखक पढ़नेवालों के साथ न होने के कारण लेखन के संदर्भों को स्पष्ट करना आवश्यक होता है । इसलिए लिखित भाषा औपचारिक हो, जिससे वह पढ़नेवालों तक आसानी से पहुँच सके ।

14) भौगोलिक दृष्टि से भिन्न-भिन्न प्रदेश में रहनेवाले लोगों के जीने का तरीका तथा संस्कृति भिन्न-भिन्न होती है । वे उनकी आवश्यकता के अनुसार भाषा का प्रयोग करते हैं । इसलिए अध्यापक को छात्रों की भाषा को सावधानी से समझकर उनका उपहास्य नहीं करना चाहिए ।

15) किसी भी अच्छे संवहन का प्रमुख लक्षण यह है कि किसी जानकारी में महसूस होनेवाली कमियों को दूर करना । यह कमियाँ हमारे व्यक्तित्व को कुंठित बनाती हैं । इन कमियों को मिटाने के लिए छात्रों को प्रश्न पूछने चाहिए । यदि उन्हें अवसर न मिले तो उस विषय के बारे में छात्रों का ज्ञान आधा रह जाता है ।

16) स्वतंत्र छात्र उनके विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं । श्रोताओं के स्तर के अनुसार वे उनकी मौखिक अभिव्यक्ति में बदलाव लाते हैं । श्रोताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों से विचलित न होकर सुक्त रूप से उनकी चर्चा आगे बढ़ाते हैं ।

17) छात्रों को कक्षा में आसानी से पढ़ने के लिए कक्षा में ग्रंथालय की स्थापना आवश्यक है । अगर छात्रों के मन में कोई सवाल उठे या उन्हें कोई जानकारी पानी हो तो वे कक्षा के ग्रंथालय से वह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

18) समर्थ पाठक पाठ पढ़ते समय उसमें आये हुए विचारों को ध्यानपूर्वक सोचते हैं । वे पाठ का अर्थग्रहण करके उच्च स्तर पर पहुँचने का प्रयास करते हैं । लिखते समय यदि मन भटकने लगे तो उसे वापस लाने की क्षमता उनमें होती है । जब किसी शब्द का अर्थग्रहण न हो तो उसे समझने के लिए विविध तंत्रों का प्रयोग करते हैं ।



institutes.aglasem.com
aglasem.com

## भाग - III

**III. सभी 8 प्रश्नों के उत्तर लिखिए –** **5 × 8 = 40**

19) अ) 1. भाषा का गहरा ज्ञान : अध्यापक को भाषा की गहरी समझ होनी चाहिए । उसे भाषा के ध्वनि, रूप, पद आदि का ज्ञान होना चाहिए ।

2. मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति : अध्यापक को मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति का ज्ञान सरल, स्पष्ट तथा समृद्ध हो । उनका व्याकरण शुद्ध होना चाहिए ।

3. शब्द भण्डार की समृद्धता : अध्यापक का शब्द भण्डार समृद्ध तथा विस्तृत हो । उसे शब्द तथा वाक्यों का प्रयोग कब, कहाँ और कैसे करना चाहिए, इसका सही ज्ञान हो ।

4. भाषा निपुणता : अध्यापक को पाठ्य-पुस्तकों के साथ-साथ अध्ययन सामग्री का प्रयोग कब और कैसे करना है इसकी समझ हो ।

5. साहित्य का वाचन : अध्यापक को नाटक, निबंध, कथा, कहानियाँ आदि द्वारा विवरणात्मक तथा प्रबोधन साहित्य का वाचन करना चाहिए ।

6. अध्यापक को बच्चों की पृष्ठभूमि की समझ हो ।

**अथवा**

आ) बच्चों के पास शब्दों का संग्रह कम होने के कारण विज्ञान का पाठ पढ़ाते समय उनके सीखने में बाधा आती है । इसलिए भाषा शिक्षा में शब्द भण्डार बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है । उदा० - विज्ञान पाठ के शिथिल, आधार, स्तंभ, विलीन जैसे शब्द भाषा पाठ में पढ़ने से अन्य विषय सीखने में छात्रों को आसानी होती है । गणित का विषय सिखाते समय बच्चों को ''स्थान'' शब्द की कल्पना स्पष्ट होने से उसे ''स्थान'' का मूल्य आसानी से मालूम होगा । भाषा विषय में जब देवस्थान, निवास स्थान आदि शब्द जब छात्र सुनते हैं तब उन्हें किसी जगह की कल्पना आ जाती है । गणित विषय समझते समय ''स्थान'' शब्द कोई दूसरा अर्थ बताता है, यह भाषा की शिक्षा से छात्र समझते हैं ।

20) अ) 1. मूल्यांकन के उद्देश स्पष्ट हो । इससे स्वावलोकन सुलभ होता है । शिक्षा को स्थिर बनाने के लिए स्वावलोकन उपयोगी होता है ।

2. उद्देश्य के अनुसार साधन उपलब्ध हो । मौखिक कौशल का मूल्यांकन करने के लिए बच्चों के उच्चारण, विचार, पद प्रयोग आदि पर ध्यान देना आवश्यक है ।

3. मूल्यांकन तंत्र भाषा के उपयोग को स्पष्ट करता है । छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति में स्पष्टता हो ।

4. मूल्यांकन के बाद छात्रों को स्वावलोकन के लिए समय देना चाहिए । स्वावलोकन से छात्र सही शिक्षा पाता है ।

5. अंतिम परीक्षा के अंकों को दाखिल करने के लिए विषयवस्तु की नीली नक्शा तथा समतोल प्रश्न-पत्रिका तैयार करनी चाहिए ।

**अथवा**



institutes.aglasem.com
aglasem.com

आ) **स्व-शिक्षा की क्षमताएँ :**

1. भाषा में निपुणता ।
2. समाचार की उत्पत्ति पर विचार विमर्श ।
3. सुने और पढ़े हुए विषय की टिप्पणी करना ।
4. प्राप्त ज्ञान के साथ पूर्व ज्ञान का संबंध जोड़ना ।
5. उद्देश्य से संबंध न होनेवाले पूरकों को अलग करना ।
6. अपरिचित व्यक्ति के साथ उपयुक्त संभाषण कौशल करना ।
7. अपने से अलग तरीके से सोचनेवालों के साथ स्वस्थ संवाद करना ।
8. किसी पूर्वाग्रह के बिना विषयवस्तु को स्वीकार करना ।
9. आवश्यक तथा सही ज्ञान प्राप्त करना ।
10. सावधानी से औरों की बातें सुनना ।

21) अ) **निम्न कक्षाओं में चैतन्य विधि :**

1. पूर्व तैयारी की गतिविधियाँ : इसका उद्देश्य छात्रों को सीखने के लिए तैयार करना है । बच्चों को पढ़ाई की ओर आकर्षित करने के लिए कक्षा में खेल और गतिविधियों का आयोजन करना ।
2. शिक्षा की पूरक गतिविधियाँ : पठित पाठ से संबंध जोड़कर छात्रों का ध्यान पाठ की ओर खींचना जिससे छात्र तन-मन से आगे के कार्य करने के लिए तैयार हो जाए ।
3. शिक्षा के अंशों का प्रयोग : छात्र विविध प्रयोगों द्वारा सामान्य विचार सीखने लगता है । उनकी शिक्षा में क्रियाशील चैतन्य लाना इस विधि का उद्देश्य है ।
4. सांधिक प्रयोगों की उपयोगिता : छात्रों में ऐसा विश्वास निर्माण करना कि सीखा हुआ विषय उनके जीवन के लिए उपयोगी है । इससे उनके प्रयत्न की सार्थकता होती है ।
5. मूल्यांकन का प्रयोग : पाठ के उद्देश्य की सफलता जानने के लिए मूल्यांकन आवश्यक है । इससे रह गयी त्रुटि का निवारण होता है । बच्चे खुद स्वावलोकन करते हैं ।

**अथवा**

आ) **माध्यम में प्रयोग की गयी भाषा :**

माध्यम अत्यंत प्रभावशाली साधन होते हैं । वे देखने वालों के मन को मोहित करते हैं । वे हमारे चिंतन, जीने का क्रम, सांस्कृतिक परंपरा आदि पर भी प्रभाव डालते हैं । इसलिए छात्रों को पाठशाला में ऐसी शिक्षा दी जाए कि वे खुद उनके नैतिक जीवन के बारे में जिम्मेदारी ले । आजकल ई-मेल, मोबाईल, फेस बुक आदि माध्यम में प्रयोग की जानेवाली भाषा का महत्व है । उन्हीं शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग छात्र उनके लेखन में करते हैं । इसलिए अध्यापक को भाषा की कक्षा में संदर्भ के अनुसार भाषा का प्रयोग करने के बारे में छात्रों को सिखाना चाहिए ।



institutes.aglasem.com
aglasem.com

22) अ) **कक्षा में समूह चर्चा :**

- समूह चर्चा करते समय सभी छात्रों को गोलाकार स्थिति में बैठना चाहिए ।
- जब एक छात्र बोलता है तो बाकी छात्रों को उसकी बातें सुननी चाहिए ।
- जब कोई छात्र बोलना चाहे तो उसे हाथ उठाकर इशारा करना चाहिए ।
- अभिप्राय देते समय यह देखे कि किसी को वैयक्तिक चोट न पहुँचे ।
- चर्चा करते समय किसी पर वैयक्तिक टीका नहीं करना चाहिए ।

**अथवा**

आ) **बच्चों से कथा सुनवाना :**

- चुनी हुई कथा को सुनाने के पहले खुद पढ़ना ।
- कहानी में आनेवाले पात्रों के अनुसार मुँह पर दिखाई देनेवाले भाव आवश्यकता के अनुसार बदलना ।
- कहानी को आकर्षित करनेवाले साधनों को पहचानना । जैसे – गुड़िया, चित्र आदि ।
- कहानी कथन की ध्वनियों में होनेवाले उतार-चढ़ाव पहचानना ।
- कहानी की सीख, कल्पनाशीलता, रोचकता आदि के बारे में छात्रों को बताना ।
- कहानी कथन के आरंभ, बीच तथा अंत में उद्‌भवने वाले प्रश्नों को पहचानना ।

23) अ) कक्षा में आनेवाले छात्र भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक वातावरण से आने के कारण उनकी बोली की भाषा भिन्न-भिन्न होती है । इसलिए अध्यापक कक्षा में बहुभाषा का प्रयोग करके छात्रों की भाषा समृद्ध कर सकते हैं । बहुभाषा और शिक्षा संपादन में धनात्मक संबंध होता है । बहुभाषिकता के कारण व्यक्ति में ज्ञानात्मक सभ्यता तथा सामाजिक सहिष्णुता दिखाई देती है । यह ज्ञानात्मक सभ्यता तथा सामाजिक सहिष्णुता व्यक्ति को सकारात्मक रूप से ऊँचाई तक पहुँचाती है । बहुभाषिक कक्षाओं में छात्रों को भिन्न-भिन्न संस्कृति का परिचय होता है । इससे छात्रों को भाषा वैविध्य की जानकारी होती है । बहुभाषा कक्षा में अनेक संस्कृतियों का संगम तथा मिलाप होता है।

**अथवा**



institutes.aglasem.com
aglasem.com

आ) शीघ्र भाषण – छात्रों को किसी एक विषय देकर उस विषय पर सोचने और विचार इकट्ठा करने के लिए 9 मिनट की अवधि तथा उस विषय पर बेरोक बोलने के लिए दो मिनट की अवधि दी जाती है, उसे शीघ्र भाषण कहते हैं ।

- शीघ्र भाषण में भाग लेने से पहले छात्रों को सांदर्भिक रूप में दिये हुए विषय पर स्फूर्ति से बोलने का अभ्यास कराना चाहिए ।
- अध्यापक को शीघ्र भाषण के लिए विषय चुनकर रखने चाहिए ।
- दिये हुए विषय को चिट्ठी में लिखकर भाषण के एक मिनट पहले छात्रों को देने चाहिए ।
- जो छात्र हड़बड़ाते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए ।

24) अ) **छात्रों का मौखिक कौशल बढ़ाना –**

- भाषा का उपयोग करते समय बच्चों को उनके अभिप्राय दूसरों को समझाने के लिए मुक्त वातावरण देना चाहिए ।
- मौखिक अभिव्यक्ति में होनेवाली गलतियों को बार-बार दोहराना नहीं चाहिए ।
- बीच-बीच में टोकने से उनके विचारों में बाधा आती है और वे आगे के विचार ठीक ढंग से व्यक्ति नहीं कर सकते ।
- छात्रों द्वारा की गयी गलतियाँ यदि सांदर्भिक या संयोग से हो गयी हो तो उन्हें दोहराना नहीं चाहिए ।
- बच्चों को बोलते समय उनकी गलतियों का फिडबैक नहीं देना चाहिए ।
- अध्यापक को खुद मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल होना चाहिए ।

**अथवा**

आ) **कक्षा में चर्चा स्पर्धा का आयोजन –**

चर्चा स्पर्धा के लिए एक समूह के छात्र उन्हें दिये हुए विषय पर उनके विचार प्रकट करें । बाद में विरोधी पक्ष को उनके विचार प्रकट करने के लिए समय दिया जाए ।

- इन स्पर्धाओं में किसी छात्र या समूह पर वैयक्तिक टीका नहीं करनी चाहिए ।
- छात्रों को उनके विचार प्रकट करने के लिए अवकाश देना चाहिए ।
- छात्रों के स्तर के अनुसार स्पर्धा के विषय चुनने चाहिए ।
- कभी-कभी चर्चा अलग विषय पर होने लगे तो अध्यापक को छात्रों को चर्चा के मूल विषय पर लाना चाहिए ।



institutes.aglasem.com
aglasem.com

25) अ) **निबंध लेखन –**

निबंध का मतलब है दिये हुए विषय पर संशोधन परख लेखन करना ।

निबंध के तीन भाग होते हैं –

(i) आरंभ

(ii) मध्य

(iii) उपसंहार ।

(i) आरंभ निबंध का पहला भाग होता है । इसका रोचक तथा आकर्षित होना अति आवश्यक है । आरंभ विषय के अनुकूल होना चाहिए ।

(ii) मध्य निबंध के मध्य भाग में विषय के संबंधित सभी विचारों का उचित उल्लेख विस्तार से करना चाहिए । इसे निबंध का मेरुदंड कहा जाता है ।

(iii) उपसंहार में निबंध का सार आना चाहिए । आरंभ में जो कुछ लिखा गया है, उसका साथ इस प्रकार देना चाहिए कि लेखक प्रभावशाली उपसंहार में चार चाँद लगा देता है ।

**अथवा**

आ) **अच्छे निबंध की विशेषताएँ –**

- निबंध को किसी एक विषय को लेकर लिखना चाहिए ।
- लिखा जानेवाला निबंध सुंदर और स्पष्ट होना चाहिए ।
- निबंध की भाषा सरल और सरस हो ।
- वाक्य संघटित और यथासंभव छोटे होने चाहिए ।
- भावों को प्रकट करने के लिए उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करना चाहिए ।
- विचार क्रमबद्ध और जुड़े होने चाहिए ।
- विस्तार में एकता, संगति तथा तुलना होनी चाहिए ।
- अच्छी कहावतें और मुहावरों का प्रयोग करना चाहिए ।
- निबंध की भाषा शुद्ध होनी चाहिए ।
- निबंध में अर्थ पता होनेवाले शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ।



institutes.aglasem.com
aglasem.com

26) अ) भाषा और चिंतन एक दूसरे को पूरक होते हैं । हमारे मन से निकालनेवाले विचार या स्वगत, भाषा के चिंतन द्वारा ही साध्य होते हैं । किसी भी विषय पर दूसरों से बोलने या लिखने की अभिव्यक्ति भाषा द्वारा ही होती है । भाषा हमारे चिंतन की रूपरेखा बनाती है । भाषा के द्वारा ही हम हमारे अनुभव तथा विचारों को प्रकट करते हैं । किसी भी विषय को समझने तथा कल्पना करने में भाषा सहायकारी बनती है । शिक्षा की सारी व्यवस्था भाषा पर निर्भर है । विषय को समझने के लिए तथा परिकल्पनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए स्कूलों में सुव्यवस्थित भाषा का प्रयोग किया जाता है । सुव्यवस्थित शिक्षा भाषा के माध्यम से ही चलती है ।

**अथवा**

आ) **कुमारावस्था तक छात्रों का भाषा विकास –** कुमारावस्था में छात्र शब्दों के लाक्षणिक अर्थ समझते हैं । एक शब्द के लिए अनेक शब्द होते हैं, इसका ज्ञान उन्हें होता है । इस अवस्था में उनकी केवल भाषा की अभिवृद्धि ही नहीं बल्कि ज्ञानात्मक अभिवृद्धि भी होती है । इस उम्र में वे शब्दों के उचित अर्थ लगाने की क्षमता प्राप्त करते हैं । इस उम्र में उनमें व्याकरण एवं रचना शिक्षा की कल्पना विकसित होती है । शब्दों के अर्थ में होनेवाले सूक्ष्म भेद वे समझते हैं ।

कुमारावस्था में उन्हें समाज की रीति और नीति की जानकारी होती है । किसको ''आ'' कहना, किसको ''आओ'' कहना आदि औचित्य वे जानने लगते हैं । भयमुक्त वातावरण में किसी कार्यक्रम के सूत्रधार बनने की क्षमता उनमें बढ़ती है । वे व्याकरण युक्त भाषा का प्रयोग करते हैं ।



institutes.aglasem.com

aglasem.com